भगवान की दया और कृपा पाने का एक और तरीका

NURU YA UPENDO www.wingulamashahidi.org | 1

“धन्य हैं दयालु, क्योंकि उन्हें दया प्राप्त होगी।” —
मत्ती 5:7 (ESV)

हमारे प्रभु और उद्धारकर्ता यीशु मसीह का नाम धन्य हो।

ईश्वर की दया और कृपा आकर्षित करने के कई तरीके हैं। इनमें से कुछ प्रसिद्ध हैं: प्रार्थना, उदारता, और क्षमा। ये बाइबिल में बताए गए शक्तिशाली अभ्यास हैं। लेकिन एक और गहरा और अक्सर भुला दिया गया मार्ग भी है जो दैवीय दया के द्वार खोलता है—यह मार्ग सीधे परमेश्वर के हृदय को छूता है।

यह मार्ग है: बदला न लेना और उनके पतन पर खुश न होना जो आपके विरोधी हैं।

1. दया दया को आकर्षित करती है

दयालु होने का सिद्धांत संपूर्ण शास्त्र में दिखाई देता है:

“क्योंकि जिसने दया नहीं दिखाई, उस पर न्याय बिना दया के

भगवान की दया और कृपा पाने का एक और तरीका

NURU YA UPENDO www.wingulamashahidi.org | 2

होगा। दया न्याय पर विजय पाती है।” (याकूब 2:13)

ईश्वर की दया उन लोगों की ओर आकर्षित होती है जो उनकी प्रकृति को प्रतिबिंबित करते हैं। जब हम दूसरों को क्षमा करते हैं, आशीर्वाद देते हैं और करुणा दिखाते हैं—यहां तक कि उन लोगों के लिए भी जिन्होंने हमें चोट पहुंचाई—हम परमेश्वर के चरित्र में भाग लेते हैं, क्योंकि

“प्रभु दयालु और कृपालु है, क्रोध में धीमा और अटूट प्रेम
में प्रचुर है।” (भजन 103:8)

2. दूसरों के पतन पर खुश होने का खतरा

आज कई विश्वासियों को यह भ्रम है कि परमेश्वर उनके शत्रुओं के पतन में प्रसन्न होते हैं। कुछ लोग तो उन लोगों के विनाश की प्रार्थना तक करते हैं जिन्होंने उन्हें चोट पहुँचाई, मानो ईश्वर का न्याय व्यक्तिगत बदले का आदेश हो। लेकिन शास्त्र स्पष्ट रूप से चेतावनी देता है:

नीतिवचन 24:17–18 (ESV)

भगवान की दया और कृपा पाने का एक और तरीका

NURU YA UPENDO www.wingulamashahidi.org | 3

“जब तुम्हारा शत्रु गिरे तो आनन्दित मत हो, और जब वह ठोकर
खाए तो तुम्हारा हृदय खुश न हो, न तो प्रभु इसे देखे और अप्रसन्न हो जाए, और अपना क्रोध उससे दूर कर दे।”

यह पद दर्शाता है कि परमेश्वर प्रतिशोधी नहीं है। उनका अनुशासन उद्धारकारी है, विनाशकारी नहीं। जब हम किसी और के पतन पर खुश होते हैं, हम अहंकार में उतर जाते हैं, और अहंकार हमेशा परमेश्वर के विरोध को आमंत्रित करता है (याकूब 4:6)।

योनाह की कहानी याद करें: उसने निनवे के विनाश का बेसब्री से इंतजार किया, लेकिन परमेश्वर ने उसकी करुणा की कमी पर उसे टोका (योनाह 4:9–11)। परमेश्वर की दया यहाँ तक फैली कि जो लोग योनाह से नफ़रत करते थे, उनके लिए भी।

3. घृणा का जवाब कृपा से देना

जब लोग आपको अनुचित रूप से कष्ट पहुँचाएँ—कलंकित करें, अपमानित करें या उत्पीड़न करें—शास्त्र हमें उच्चतर प्रतिक्रिया देने को कहता है:

भगवान की दया और कृपा पाने का एक और तरीका

NURU YA UPENDO www.wingulamashahidi.org | 4

रोमियों 12:17–21 (ESV)

“किसी को बुराई का बदला बुराई से मत दो… प्रिय, कभी अपनी प्रतिशोध न करो, पर ईश्वर के क्रोध पर छोड़ दो, क्योंकि लिखा
है, ‘प्रतिशोध मेरा है, मैं प्रतिपूर्ति करूँगा, कहता है प्रभु।’ … बुराई से हार न मानो, पर अच्छाई से बुराई पर विजय पाओ।”

ईश्वर का न्याय पूर्ण है। वह भूलते नहीं, पर हमें परिणाम पर भरोसा करने को कहते हैं। जब आप क्षमा करते हैं और उन लोगों के लिए प्रार्थना करते हैं जिन्होंने आपको चोट पहुँचाई, तो आप घोषणा कर रहे हैं कि आपका रक्षक ईश्वर है, न कि आपकी भावनाएँ।

यह दृष्टिकोण आपको कमजोर नहीं बनाता; यह आपको मसीह के समान बनाता है। सच्ची शक्ति संयम में दिखाई देती है।

4. दाऊद का उदाहरण — शापों को आशीर्वाद में बदलना

राजा दाऊद इस रहस्य को समझते थे। वह कभी नहीं खुश हुए जब उनके शत्रु परास्त हुए। जब शाऊल मरा, तो दाऊद ने शोक मनाया (2 शमूएल 1:11–12)। जब अब्शलूम मरा, तो उन्होंने दर्द में पुकारा (2

भगवान की दया और कृपा पाने का एक और तरीका

NURU YA UPENDO www.wingulamashahidi.org | 5

शमूएल 18:33)।

अपश्लूम से भागते समय, शिमी ने खुलेआम दाऊद को शाप दिया, लेकिन दाऊद ने प्रतिशोध से इनकार किया:

2 शमूएल 16:10–12 (ESV)

“राजा ने कहा, ‘मुझे तुमसे क्या लेना-देना, ज़ेरूयाह के
पुत्रों! यदि वह शाप दे रहा है क्योंकि प्रभु ने उससे कहा,
“दाऊद को शाप दे,” तो फिर कौन कहेगा, “तुमने ऐसा क्यों किया?”
… उसे छोड़ दो, और शाप दे, क्योंकि प्रभु ने उससे कहा है। हो सकता है कि प्रभु आज उसके शाप के बदले मुझ पर भलाई करे।’”

दाऊद हर अपमान को आशीर्वाद के अवसर के रूप में देखते थे। उन्हें विश्वास था कि ईश्वर मानव अन्याय को दैवीय कृपा में बदल सकते हैं।

5. अय्यूब की धार्मिकता और दैवीय कृपा

अय्यूब ने भी इस सत्य में चलना सीखा। उनके दुख और दूसरों की शत्रुता के बावजूद, उन्होंने कहा:

भगवान की दया और कृपा पाने का एक और तरीका

NURU YA UPENDO www.wingulamashahidi.org | 6

अय्यूब 31:29–30 (ESV)

“यदि मैंने उस व्यक्ति के विनाश पर आनन्दित हुआ जो मुझसे
नफरत करता था, या बुराई में खुश हुआ—(मैंने उसके जीवन के
लिए शाप मांग कर अपने मुँह से पाप नहीं किया)।”

अय्यूब का संयम वास्तविक धार्मिकता को दर्शाता है। उनका सत्यनिष्ठा और करुणा उन्हें परमेश्वर के सामने सम्मान दिलाती है।

जब परीक्षा समाप्त हुई,

“प्रभु ने अय्यूब की संपत्ति बहाल की … और उसे पहले से
दोगुना दिया।” (अय्यूब 42:10)

उनकी दया ने वृद्धि और आशीष लायी।

6. मसीह का उदाहरण — दया का अंतिम आदर्श

भगवान की दया और कृपा पाने का एक और तरीका

NURU YA UPENDO www.wingulamashahidi.org | 7

दयालुता का हर सिद्धांत यीशु मसीह में पूर्ण रूप से मिलता है।

मत्ती 5:43–45 (ESV)

“तुमने सुना कि कहा गया है, ‘तुम अपने पड़ोसी से प्रेम करो और अपने शत्रु से नफरत करो।’ पर मैं तुम्हें कहता हूँ, अपने शत्रुओं से प्रेम करो और उन लोगों के लिए प्रार्थना करो जो तुम्हारा उत्पीड़न करते हैं, ताकि तुम अपने स्वर्गीय पिता
के पुत्र बनो।”

क्रूस पर, यीशु ने अपने निष्पादकों के लिए प्रार्थना की:

“पिता, उन्हें क्षमा कर, क्योंकि वे नहीं जानते कि वे क्या कर रहे हैं।” (लूका 23:34)

उनकी आज्ञाकारिता और नम्रता के कारण,

“ईश्वर ने उसे अत्यधिक उच्च किया और हर नाम से ऊपर का नाम

भगवान की दया और कृपा पाने का एक और तरीका

NURU YA UPENDO www.wingulamashahidi.org | 8

दिया।” (फिलिप्पियों 2:9)

यदि हम उनकी दया और नम्रता में भाग लेते हैं, तो हम भी उनके समान सम्मान पाएंगे।

7. दया का धर्मशास्त्र

धार्मिक दृष्टि से, दया कमजोरी नहीं है—यह करुणा के माध्यम से प्रकट होने वाली दैवीय शक्ति है।

दयालुता न्याय को स्थगित करती है। (भजन संहिता 3:22–23)
दयालुता संबंध को पुनर्स्थापित करती है। (इफिसियों 2:4–5)
दयालुता परमेश्वर के राज्य को प्रकट करती है। (लूका 6:36)

जब आप प्रतिशोध से इनकार करते हैं, आप क्रूस के आधार पर खड़े होते हैं, जहां न्याय और दया मिले। दया विजयी होती है क्योंकि यह ईश्वर के उद्धार का प्रतिबिंब है।

8. दया के पात्र के रूप में जीना

पौलुस लिखते हैं:

भगवान की दया और कृपा पाने का एक और तरीका

NURU YA UPENDO www.wingulamashahidi.org | 9

रोमियों 9:23 (ESV)

“ताकि अपनी महिमा की संपत्ति को दया के पात्रों में प्रकट
कर सके, जिन्हें उसने पूर्वनिर्धारित किया है।”

आपको दयालुता का पात्र बनने के लिए बुलाया गया है। इसका अर्थ है दूसरों के प्रति परमेश्वर की सहनशीलता, करुणा और क्षमा को दर्शाना।

क्या आप चाहते हैं कि आपको ईश्वर की दया, कृपा और आशीष मिले? तो दया के मार्ग को चुनें। अपमान सहन करें, प्रतिशोध न लें। जिन्होंने आपको चोट पहुँचाई उनके लिए प्रार्थना करें। जिन्होंने आपको शाप दिया उन्हें आशीर्वाद दें।

याद रखें:

दाऊद आशीषित हुआ क्योंकि उसने शाप नहीं दिया।
अय्यूब बहाल हुआ क्योंकि उसने शत्रुओं के पतन पर खुश न होकर संयम रखा। मसीह ऊँचा किया गया क्योंकि उन्होंने अपने उत्पीड़कों को क्षमा किया।

भगवान की दया और कृपा पाने का एक और तरीका

NURU YA UPENDO www.wingulamashahidi.org | 10

यदि आप उसी आत्मा में चलेंगे, तो परमेश्वर समय पर आपको ऊँचा करेंगे (1 पतरस 5:6)।

रोमियों 12:18 (ESV)

“जहां तक तुम्हारे लिए संभव है, सबके साथ शांति से रहो।”

दयालुता घृणा को निष्क्रिय करती है। क्षमा कृपा को आमंत्रित करती है। जो बदला लेने से इनकार करता है, वह परमेश्वर के हृदय का प्रतिबिंब है।

क्या आप परमेश्वर की दया चाहते हैं? तब दूसरों पर दया करें। क्या आप उनकी कृपा चाहते हैं? तब उन लोगों से प्रेम करें जो इसके योग्य नहीं हैं।

यही मसीह का मार्ग है — और उनके सच्चे शिष्यों की पहचान।

यीशु मसीह शीघ्र आ रहे हैं।
आइए हम दयालु लोगों के रूप में जीवन बिताएँ, अपने स्वर्गीय पिता में बच्चों की तरह चमकते हुए।

भगवान की दया और कृपा पाने का एक और तरीका

NURU YA UPENDO www.wingulamashahidi.org | 11

JIUNGE NA GROUP LETU LA WHATSAPP HAPA >> WHATSAPP GROUP….

Share on:
WhatsApp